Department of Education (CIE)
University of Delhi

in collaboration with

Institute for Educational and Developmental Studies (IEDS)

Organizes

A National Seminar
on
NATIONAL CURRICULUM FRAMEWORK FOR FOUNDATIONAL STAGE 2022

on **Saturday, November 12th 2022** at **10:00 am to 5:00 pm**

Venue: Auditorium, Institute of Lifelong Learning,
ARC Building, (Opp. S.G.T.B. Khalsa College), University of Delhi

Chief Guest
Dr. Subhas Sarkar
Minister of State
Ministry of Education, Govt. of India

Guest of Honour
Professor D. K. Saklani
Director, NCERT

Keynote Speaker
Professor Anurag Behar
Member, Steering Committee, NCF
Former VC, Azim Premji University

Presided by
Professor Yogesh Singh
Vice-Chancellor
University of Delhi

Organizer
Professor Pradeep K. Joshi
Chairperson, IEDS
Former Chairman, UPSC

Organizer
Professor Pankaj Arora
Head, Department of Education (CIE)
University of Delhi

दीप से दीप जले

A CENTURY OF ACADEMIC EXCELLENCE
100 YEARS 1922-2022

INSTITUTE FOR EDUCATIONAL AND DEVELOPMENTAL STUDIES
IEDS

शिक्षा विभाग (सी. आई. ई.)

दिल्ली विश्वविधयालय

एवमं

इंस्टिट्यूट फॉर एजुकेशनल एंड डेवलपमेंटल स्टडीज (आई. ई. डी. इस.)

के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022

शनिवार, 12 नवंबर 2022 सुबह 10.00 बजे से शाम 5:00 बजे तक

स्थान: सभागार, जीवन पर्यन्त शिक्षण संस्थान
एआरसी बिल्डिंग, (खालसा कॉलेज के सामने) दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य अतिथि
डॉ सुभाष सरकार
राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय

विशिष्ट अतिथि
प्रोफेसर डी. के. सकलानी
निदेशक, एनसीईआरटी

मुख्य वक्ता
प्रोफेसर अनुराग बेहर
सदस्य संचालन समिति, एन.सी.एफ
पूर्व कुलपति, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

अध्यक्षता
प्रोफेसर योगेश सिंह
कुलपति
दिल्ली विश्वविद्यालय

व्यवस्थापक
प्रोफेसर प्रदीप के. जोशी
अध्यक्ष आई.ई.डी.एस.
भूतपूर्व अध्यक्ष, यू.पी.एस.सी.

व्यवस्थापक
प्रोफेसर पंकज अरोड़ा
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग (सी. आई. ई.)
दिल्ली विश्वविद्यालय

Concept Note on NCF-Foundational Stage

The National Education Policy (NEP) 2020 is a transformative initiative to usher India to prepare to meet the challenging demands of 21st-century society. To enable its implementation, the National Curriculum Framework for Foundational Stage 2022 has been developed by the National Steering Committee for National Curriculum Framework. Its objective is to realise the highest quality education for all our children, consistent with learning in an equitable, inclusive, and plural society as envisaged by our Constitution.

This is India's first-ever integrated Curriculum Framework for children ages 3-8. It is a direct outcome of the 5+3+3+4 'curricular and pedagogical structure' proposed by the NEP 2020 for School Education. The National Steering Committee for NCFs has aimed to build a curriculum framework for the Foundational Stage considering the extensive worldwide research on ECCE, leveraging the rich traditions of India and building on the recent initiatives, such as NIPUN Bharat and Vidya Pravesh, to have an early childhood care and learning eco-system for all of India's children.

Implicit in the NCF for Foundational Stage is the recognition that the first eight years of human life are critical for future learning and health. Learning delays can be significantly reduced with the help of intervention in the early years. In that context, the new 5+3+3+4 curricular structure, which integrates ECCE for all children aged 3 to 8, is included in the National Education Policy (NEP) 2020.

At the Foundational Stage, the curriculum is contextualised and rooted with content and pedagogy derived from children's life experiences that reflect the familiar, i.e., the cultural and social context in which the child is growing. This will help build deep connections with children and develop ownership of teachers and children of the curriculum. It lays clear pathways for competencies and outcomes, teacher engagement, school environment, child safety and assessment.

The new framework is rooted in the concept of “Pancha kosha”, which are physical development (Sharirik Vikas), development of life energy (Pranic Vikas), emotional and mental development (Manasic Vikas), intellectual development (Bauddhik Vikas), and spiritual development (Chaitsik Vikas). Keeping 'play' at the core of curriculum organisation provides for the overall holistic transformation of the curriculum of the ECCE. It focuses not only on the revision of textbooks, school infrastructure, and culture but also on changes in the teaching and learning process to provide a holistic learning experience to students. Such an experience will cater to children's different needs and levels, including children with special needs, for learning to be genuinely inclusive.

The changes proposed in the NCF must respond to India's glorious unity and diversity. Based on the guiding principles of the curriculum framework, questions about novelties that relevant functionaries can bring in teaching-learning materials, textbooks, pedagogical practices such as assessment, school and classroom practice, learning environment and culture of our educational institutions. Further, what role can parents and other community members and citizens of India play in this transformation?

With all these and many such questions, the present seminar focuses on bringing academicians, teachers, educators and students to deliberate and make suggestions for implementing NCF-Foundational Stage 2022.

'बुनियादी चरण के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2022' पर संकल्पना पत्रक

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020', 21वीं सदी के समाज की चुनौतीपूर्ण मांगों की पूर्ति के सन्दर्भ में भारत को तैयार करने के लिए एक परिवर्तनकारी पहल है। इसके कार्यान्वयन की सक्षमता के लिए, 'बुनियादी चरण के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2022' को 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा' समिति द्वारा विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य, सीखने के सन्दर्भ में, हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसंगत, समावेशी और बहुलवादी समाज में उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा का अनुभव हमारे सभी बच्चों को कराना है।

यह 3-8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए भारत की पहली एकीकृत पाठ्यक्रम रूपरेखा है। यह विद्यालयी शिक्षा के लिए एनईपी- 2020 द्वारा प्रस्तावित 5 + 3 + 3 + 4 'पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना' का प्रत्यक्ष प्रतिफल है। राष्ट्रीय संचालन समिति के द्वारा ईसीसीई पर व्यापक विश्वव्यापी शोध पर विचार करते हुए बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए इस राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा का निर्माण यह ध्यान रखते हुए किया गया है कि यह भारत की समृद्ध परंपराओं का उन्यन करे व इसी क्रम मे 'निपुन भारत' और 'विद्या प्रवेश' जैसी योजनाओ को, सीखने के लिए वांछित वातावरण व भारत के सभी बच्चों के बालपन की उचित देखभाल हेतु लागू किया गया है।

बुनियादी चरण के लिए एनसीएफ में अंतर्निहित यह मान्यता है कि मानव जीवन के पहले आठ वर्ष भविष्य की सीखने और स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा में इस हस्तक्षेप की सहायता से सीखने में देरी को बहुत स्तर तक कम किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में, नई 5 + 3 + 3 + 4 पाठ्यक्रम संरचना, जो 3 से 8 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए ईसीसीई को एकीकृत करती है, को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 में सम्मिलित किया गया है।

बुनियादी स्तर पर, पाठ्यक्रम को बच्चों के जीवन के अनुभवों से प्राप्त सामग्री और शिक्षाशास्त्र के साथ संदर्भित और निहित किया जाता है जोकि उसके उस परिचित (अर्थात्, सांस्कृतिक और सामाजिक) संदर्भ को दर्शाता है जिसमें बच्चा बढ़ रहा है। यह बच्चों के साथ गहरे संबंध स्थापित करने और शिक्षकों और बच्चों के पाठ्यक्रम पर स्वामित्व को विकसित करने में मदद करेगा। यह दक्षताओं और परिणामों, शिक्षक संलग्नता, स्कूल के वातावरण, बाल सुरक्षा और मूल्यांकन आदि के लिए स्पष्ट मार्ग प्रदान करता है।

यह नया ढांचा "पंच कोष" की अवधारणा में निहित है, जो हैं - शारीरिक विकास, जीवन ऊर्जा का विकास (प्राणिक विकास), भावनात्मक और मानसिक विकास, बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक विकास। पाठ्यक्रम संगठन के मूल में 'खेल' को रखने से ईसीसीई के पाठ्यक्रम के व्यापक एवं समग्र परिवर्तन का अवसर मिलता है। यह न केवल पाठ्यपुस्तकों, विद्यालयों की बुनियादी संरचनाओं और संस्कृति के संशोधन पर केंद्रित है, बल्कि छात्रों को समग्र सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में नवाचारी परिवर्तन पर भी केंद्रित है। सीखने कि प्रक्रिया को वास्तव में समावेशी होने के लिए इस प्रकार का अनुभव, बच्चों की विभिन्न स्तरों और आवश्यकताओं की पूर्ती को बल प्रदान करेगा, जिसमें विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे भी सम्मिलित हैं।

उपरोक्त परिवर्तन भारत की गौरवशाली एकता और विविधता के प्रति पूरी तरह अनुक्रियाशील होने चाहियें। वास्तविक चुनौती, न केवल विचारों में अपितु शैक्षिक पद्धतियों के परिवर्तन में निहित है। पाठ्यक्रम ढांचे के मार्गदर्शक सिद्धांतों के आधार पर, यह प्रासंगिक प्रश्न उठाता है कि शिक्षकों, राज्य, बोर्डों और विद्यालय सहित संबंधित पदाधिकारी, शिक्षण-शिक्षण सामग्री, पाठ्यपुस्तकों, शैक्षणिक प्रथाओं, मूल्यांकन, स्कूल और कक्षा पद्धतियों, सीखने के वातावरण और हमारे शैक्षणिक संस्थानों की संस्कृति में किस प्रकार के वास्तविक परिवर्तन ला सकते हैं। माता-पिता, समुदाय के सदस्य और भारत के नागरिक जैसे व्यक्ति, जिनकी शिक्षा में अधिक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है, इस परिवर्तन की प्रक्रिया में क्या भूमिका निभा सकते हैं?

इन सभी और कई अन्य प्रश्नों के साथ, वर्तमान संगोष्ठी शिक्षाविदों, शिक्षकों, और छात्रों को 'बुनियादी चरण के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा-2022' को लागू करने के लिए चर्चा हेतु व सुझाव देने पर केंद्रित है।